उसमान अब्दुल करीम खान

संगीत नाटक अकादेमी अमृत पुरस्कारः
हिंदुस्तानी वाद्य संगीत (सितार)

श्री उसमान अब्दुल करीम खान का जन्म 22 सितंबर 1940 को हुआ। आप पुणे में रहते हैं। आपका संबंध संगीतकार परिवार से है। आप छठी पीढ़ी के संगीतकार और तीसरी पीढ़ी के शास्त्रीय सितार वादक हैं। आप मैसूर महाराज के नवरत्नों में से एक रहे धारवाड़ के रहमत खान के पौत्र और अब्दुल करीम खान के पुत्र हैं। आपने महज 6 वर्ष की आयु में ही सितार वादन सीखना शुरू कर दिया था। आप जिस तरह से "गायकी अंग" और "तंतकरी अंग" का मिश्रण करते हैं, वह आपको विशिष्ट बनाता है और इस प्रकार आप अपने प्रतिष्ठित परिवार के योग्य उत्तराधिकारी सिद्ध होते हैं।

सन् 1985 में पेरिस में "24 घंटे का राग सत्र" आयोजित किया गया था, जिसमें सितार वादक के रूप में आप भी शामिल हुए थे। उसी शहर में सन् 1988 में 9 घंटे का पूरी रात चलने वाला संगीत कार्यक्रम आयोजित किया गया था, जिसमें आपने भी अपनी प्रस्तुति दी थी। मई 1986 में मार्सिले में आयोजित "इंटरनेशनल गिटार फेस्टिवल" में प्रस्तुति देने वाले पूर्वी एशिया के आप एकमात्र कलाकार थे। आपने भारत, यूरोप, अमेरिका, खाड़ी देशों, मलेशिया, दक्षिण कोरिया, जापान और ऑस्ट्रेलिया में आयोजित प्रतिष्ठित संगीत समारोहों में अपनी प्रस्तुतियाँ दी है। आप कर्नाटक विश्वविद्यालय के संगीत संकाय के प्रमुख रह चुके हैं। आप 1960 के दशक से पुणे स्थित "नाद मंदिर" के माध्यम से अपनी अनूठी विरासत को अपने शिष्यों तक पहुँचा रहे हैं। आपके संगीत के कई ऑडियो कैसेट और सीडी उपलब्ध हैं।

आपको मलेशिया स्थित ललित कला मंदिर के हिंदुस्तानी संगीत के अंतर्राष्ट्रीय डीन के रूप में नामांकित किया गया था, और 'सितार नाद योगी' की उपाधि भी प्रदान की गई थी।

हिंदुस्तानी वाद्य संगीत (सितार) में योगदान के लिए श्री उसमान अब्दुल करीम खान को संगीत नाटक अकादेमी अमृत पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

USMAN ABDUL KARIM KHAN

Sangeet Natak Akademi Amrit Award:
Hindustani Instrumental Music (Sitar)

Born on 22 September 1940, Shri Usman Abdul Karim Khan lives in Pune. He is a sixth-generation musician and third generation classical Sitar player – grandson of Rehmat Khan of Dharwad – one of the Navratnas of the Maharaja of Mysore, and son of Abdul Karim Khan, who initiated him into playing this instrument at the age of 6 years. Usman Khan's fine blend of the "Gayaki ang" and "Tantkari ang" makes him a deserving legatee of his illustrious family.

Shri Usman Khan was the Sitar player for the "24 hour Raag session" in Paris in 1985, and in the same city has performed for 9 hours with his all-night concert in 1988. He was the only instrumentalist from the East to give a full concert at the "International Guitar Festival" in Marseilles in May 1986. Indeed, he has featured in most of the important music festivals in India, Europe, the USA and Gulf countries, Malaysia, South Korea, Japan and Australia. Usman Khan has been Head of the Faculty of Music at the Karnataka University. He has been passing his unique heritage to disciples across the world since the 1960s through "Naad Mandir" in Pune. He has several audio cassettes and CDs to his credit.

Shri Khan has been nominated as International Dean, Hindustani Music of the Temple of Fine Arts in Malaysia which has also conferred on him the title 'Sitar Nada Yogi'.

Shri Usman Abdul Karim Khan receives the Sangeet Natak Akademi Amrit Award for his contribution to Hindustani instrumental music.